ISSN No. 2394-9996

कहानीकार रामदरश मिश्र

डॉ. वंदन बा. जाधव.
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
ता. पाटोदा, जि. बीड.

हिन्दी कहानी साहित्य में सन 1960 के बाद जो कहानीकार उभरकर आए उनमें डॉ. रामदरश मिश्र प्रमुख है। मिश्रजी का लेखन कार्य सन 1950 के आसपास शुरू हो चुका था पर एक कहानीकार के रूप में वे सन 1960 के बाद प्रतिष्ठित हुए है। उनकी कहानियों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वे ग्रामीण परिवेश के कहानीकार है और किसी न किसी रूप में वे प्रेमचंद की परंपरा से जुडे हुए है। ग्रामीण जीवन का चित्रण करनेवाली उनकी कहानियों को पढ़कर लगता है कि वे फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह और मार्कण्डेय की परंपरा का निर्वाह करनेवाले कहानीकार है। जिस समय नई कहानी मात्र मध्यमवर्गीय परिवेश के टूटते - बनते संबंधों तक सीमित थी तब भी मिश्रजी की कहानियाँ मानवीय जीवन के परिवर्तन के स्वर को मुखरीत कर रही थी। अर्थात वे मात्र ग्रामीण जीवन का ही चित्रण करनेवाले काहानीकार नहीं है। वर्तमान शहरी जीवन की विसंगतियों का प्रभावपूर्ण चित्रण भी उनकी अनेक कहानियों में हुआ हैं।

रामदरश मिश्रजी जैसा स्वतंत्र चेता कहानीकार किसी बंधी बंधाई लीक से बंधकर नहीं रहता। उनकी कहानियाँ तो सदा ही नए विषय और नवीन क्षितिजों की खोज करती है। परिवेश की यथार्थ स्थिति से चित्रित करती उनकी कहानियाँ मानवीय पीड़ाओं, अभावों और संवेदनाओं से व्याप्त है। यही कारण है कि एक प्रकार का मानवतावादी दृष्टिकोन उनकी कहानियों में सर्वत्र व्यक्त हुआ है। मिश्रजी की कहानियाँ वर्तमान जीवन की विषमताओं और उसके खोखलेपन को बड़ी शिद्दत के साथ उजागर करती है। उनकी कहानियों में ग्रामीण और शहरी जीवन की विभिन्न छटाएँ एक साथ देखने को मिलती है। वे स्वयं इस बात को स्वीकार करते है कि `शहरी कथानकों में एक देहात है और देहाती कथानकों में एक शहर है।` कहानी चाहे ग्रामीण जीवन का चित्रण करनेवाली हो या शहरी जीवन का, उसमें निश्चित रूप से परिवेश की अंतरंग स्थिति को पहचानने की क्षमता तो साथ ही साथ यथार्थ, सामाजिक तथ्यों का उद्‌घाटन भी उनकी कहानियों में सर्वत्र हुआ है।

मिश्रजी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कहानियाँ आज संवेदनात्मक धरातल पर आम आदमी को व्याकुल कर जाती है। कहानियों का कथ्य और पात्र पाठकों के मन को हिला देते है। उनकी कहानियों और उसके पात्र मात्र कटपुतलियाँ नहीं है और न ही वे परिस्थितियों से अपने आपको काट लेते है, वे तो जो यथार्थ और वास्तव है उससे सामना करने के लिए सहजता से डट जाते है। पीडित, शोषित और दलित वर्ग के प्रति सम्यक विवेक उनकी कहानियों के पात्रों में सर्वत्र दिखाई देता है। सच्ची और इमानदार अनुभूति की अत्यंत पूर्ण अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में हुई है। मिश्रजी के कहानियों का तथ्य समयगत सच्चाइयों को उजागर करता है। यह कहानीकार किसी विशिष्ट सिद्धांत या विचारधारा से कभी जुड़कर रहा नहीं क्योंकि लेखक सदा ही मानवतावादी रहा है और जन सामान्य के हित को ही उसने सदा महत्वपूर्ण माना है। डॉ. नरेंद्र मोहन लिखते है - ``रामदरश मिश्र जैसे लेखक के लिए यह लाजमी है कि वह बदलते हुए दृथ्य फलक पर अपनी नजर बराबर रखते है - क्योंकि नई परिस्थितियों से जुड़ाव और टकराव उसकी मानसिकता को रूढ़ होने से बचायेगा और दृष्टि इंन्वाल्व होने में सहाय्यक होगा।``

मिश्रजी की कहानियों का अनुशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि संघर्ष उनकी कहानियों के केन्द्र में है। संघर्ष से उनकी कहानियों का आरंभ होता है। यह संघर्ष मात्र मानसिक नहीं है। आमतौर पर अपने जीवन अनुभवों के बल पर ही कहानी लेखन करते रहे है। अतः उनकी कहानियों मे आस-पास के जीवन का और समय रूप व्यक्त हुआ है। लगातार जारी संघर्ष के कारण ही उनकी कहानियों का रचना संचार अपनी एक अलग पहचान बना सका है। वास्तव में वे सम्बध स्थितियों के भीतर से उभरनेवाली मानवीय पीडा के जो मनुष्य होने की शर्त है वे कथाकार है। इसीलिए उनका रास्ता एक लंबे अरसे में पल रही मानवीय पीड़ा द्वंन्द और दुविधा, विसंगति और विरोधाभास का रास्ता है। यह रास्ता उनका देखा भाला है। इस रास्ते की जमिन पर वे मजबुती से खड़े है।

वास्तव में मिश्रजी उन रचनाकारों मे एक है जिन्होने अपनी उपन्यास और कहानियों में इस देश के आम आदमी की पीड़ा, यातना और दुःखों को बड़े व्यापक रूप में रेखांकित किया है। उनके कथा साहित्य में विवशता, गरीबी, भूख, शोषण आदि का चुनौतियों से परिपूर्ण चित्रण किया गया है। देश शोषित, पीडित और दलित वर्गो के जीवन के अभावों, विषमताओं और विद्रुपताओं का अत्यंत मार्मिक निरूपण उनके कथा साहित्य में हुआ है। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ और

उपन्यास जीवन के यथार्थ से जुडे लगते है। विशेष रूप से उनकी कहानियों में के मजदूरों, किसानों और पीडित समाज के वास्तव सही रूप अंकित करने का प्रमाणिक प्रयास किया गया है। उनकी कहानियाँ किसानों और खेतीहार मजदूर व्यथाओं को एक ओर रेखांकित करती है तो दूसरी ओर पीडित और शोषित के संघर्ष को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है। सामान्यतया उनकी कहानियाँ किसी आयातित अनुभवों के आधार पर नहीं लिखी गई। उनकी कहानियों मे इस देश, गाँव, वहाँ का जीवन और गाँव की मिट्टी की गंध बसी हुई है। अधिकतर उनकी कहानियाँ गाँव की ओर लौटनेवाली कहानियाँ है। अपने गाँव खेत खलिहान और मिट्टी यह लेखक कभी भूलता नहीं। जीवन से जुड़ी उनकी कहानियाँ बडी सहजता से इस के आम आदमी से अपना रिश्ता बना लेती है।

मिश्रजी मूलतः ग्रामीण जीवन को अंकित करनेवाले तथा ग्राम - संवेदना के कहानिकार है और गाँव ही उनके द्वारा चित्रित कहानियों का मुख्य आधार है। इसका अर्थ यह नहीं कि वे मात्र ग्रामीण जीवन के चित्रण तक ही सीमित रहे। नगरीय बोध भी उनकी कहानियों का आधार रहा है। महानगरों में आर्थिक विवंचनाओं के साथ जीवन व्यतित करनेवाले वर्ग का अत्यंत मार्मिक निरूपण उनकी अनेक कहानियों में हुआ है। कई स्थलों पर उनकी कहानियों में आर्थिक विषमता से परिपूर्ण जीवन गुजारने वाले गाँव से आये लोगों का बड़ा ही वास्तववादी अंकन हुआ है। साथ ही मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय जीवन में व्याप्त विसंगतियों, आर्थिक विवशताओं और संघर्षो का प्रतिबिंब उनकी कहानियों में सर्वत्र देखने को मिलता है। देश में पूंजिवादियों ने जिस व्यवस्था को अपना शिकार बनाया है, उसका प्रभाव निम्न और मध्य वर्ग पर कितने भयानक रूप में पड़ा है, इस तथ्य का उद्‌घाटन उनकी कहानियाँ करती है। पूंजीवाद यह व्यवस्था ही नगरों और गावों में रहनेवाली मध्यमवर्गीय जीवन को किस तरह तोड रही है इसका प्रभावपूर्ण चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है।

मिश्रजी की कहानियों का संवाद मानव जीवन की यातनाओं त्रासदियों और अभावों का व्यापक चित्र पाठको के सामने प्रस्तुत करता है। फैंटेसी का बहुत कम प्रयोग उन्होंने किया है पर फैंटेसी जैसी यथार्थ में ना दिखनेवाली दुनिया कई बार जीवन के यथार्थ को ही व्यक्त कर देती है। उनकी कहानियों का शिल्प भी बड़ा सहज है उन्होंने सदा ही सीधि-सादी कहानियाँ लिखी है। वास्तव में उनकी कहानियों का शिल्प बड़ा सीधा - सादा और वर्णनात्मक है। वे अपने कथा को बड़ी सहजता से व्यक्त कर देते है। उनके कहानियों के विषय में ठीक ही कहा गया है

कि सादगी और सहजता उनके कथाकार के ऐसे गुण है जो उनकी कहानियों में सर्वत्र मिलेंगे। कवि होने के कारण उनकी कहानियों में कई स्थलों पर काव्यात्मकता आ गई है जो उनकी कहानियों के भाव विश्व को और अधिक प्रभावपूर्ण बना देती है।

उनके प्रमुख कहानीसंग्रह निम्नलिखित है - खाली घर, एक वह, दिनचर्या, सर्पदंश, बसंत का एक दिन, ईकसठ कहानियाँ, अपने लोग, एक कहानी लगातार आदि। इन कहानी संग्रहों के अतिरिक्त मिश्रजी के और भी कहानी संग्रह संकलन के रूप में प्रकाशित हुए है जिनमें उपर्युक्त कहानी संग्रहों में से ही कहानियाँ संकलित की गई है। उनकी `प्रिय कहानियाँ', `चर्चित कहानियाँ', तथा `श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ' चर्चित रचनाएँ है। मिश्रजी की इस रचनाओं में अनेक ऐसी कहानियाँ संकलित है जिनमें भारतीय नारी जीवन के संघर्ष, पीडित , शोषित समाज की व्यथाएँ तथा किसान वर्ग की समस्याओं का विस्तार के साथ चित्रण किया गया है।

☆☆☆